AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम का शिक्षकों की प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अविनीश कुमार
सहायक प्राध्यापक
आई.पी.एस. कॉलेज
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण के लिए अधिगम एवं शिक्षण, भाषा एवं पाठ्यक्रम, संकाय एवं विषयों की समझ, ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, स्वास्थ्य, शारीरिक आदि विषयों को सम्मिलित किया गया है। इन पाठ्यक्रमों को करके प्रशिक्षु शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने अध्ययन में प्रभावशीलता पैदा कर सकता है। शोध में ग्वालियर नगर के 50 महिला पुरुष शिक्षकों को सम्मिलित किया गया एवं सांख्यिकी में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी–मान के विश्लेषण से निष्कर्ष रूप में शिक्षकों के प्रशिक्षण में कोई अन्तर प्राप्त नहीं हुआ जबकि उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

मुख्य शब्द

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम, शिक्षक प्रभावशीलता.

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके लक्ष्य व्यक्ति समाज और देश की बुनियादी आवश्यकता के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। शिक्षा में बदलाव एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। समय–समय पर शैक्षिक मूल्यों, पाठ्यचर्या पाठ्य सामग्री सीखने सिखाने के तरीके, आंकलन की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में बदलाव किये जाते है। वर्तमान में शैक्षिक प्रक्रिया के केन्द्र में बालक है परन्तु पूरी शिक्षा व्यवस्था शिक्षक के कंधों पर टिकी हुई है। समय के साथ शिक्षक की भूमिकाओं में बदलाव आया है लेकिन आज भी शिक्षा की जिम्मेदारी मूलरूप से शिक्षक पर आ जाती है। अतः शिक्षा के उचित विकास के लिए देश को योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षक अध्यापन में पारंगत हो जाते हैं परन्तु कुछ शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम को ठीक प्रकार से आत्मसात नहीं करते हैं इसलिए उनकी शिक्षण प्रभावशीलता उच्च कोटि की नहीं हो पाती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम का शिक्षकों की प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है।

शिक्षण

ऐमिडान एवं हंटरः ''शिक्षण एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया है, जो प्रमुख रूप से कक्षा–कथन के रूप में प्रकट होती है, एक छात्र और शिक्षक के बीच अन्तः क्रिया के रूप में घटित होती है तथा जो परिभाषित कार्यकाल में सम्पन्न होती है।''

रविन्द्रनाथ टेगौरः ''शिक्षण एक ऐसा साधन है जो समाज से चयन किये गये वातावरण में बालकों को ऐसा

प्रशिक्षण देना हे, जिससे वे अपने आपको जल्दी से जल्दी उस दुनिया के अनुकूल बना लेते हैं, जिसमें वे रहते हैं।''

क्लार्क: ''शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लए नियोजित तथा संचालित की जाती है।''

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य है प्रभावक रूप से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण, अर्थात् पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरल, सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रूप से प्राप्ति हेतु ऐसे शिक्षण जो रोचक हों, आकर्षक हों तथा छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करता रहे, प्रभाव समझा जाता है।

पिनकॉफस ने शिक्षण प्रभावशीलता का प्रयोग किया और शिक्षण–प्रभावशीलता के संबंध में बताया है कि शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षण की अपस्थाओं, शिक्षण आव्यूहन, शिक्षण सिद्धांत, शिक्षण उद्देश्य तथा शिक्षण प्रतिमानों की सफलता पर निर्भर होती है। इनका प्रयोग कितनी सफलता के साथ किया गया है शिक्षण की प्रभावशीलता की वही मात्रा होती है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के प्रशिक्षण का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण में प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध विधि में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है, क्योंकि यह एक सर्वोत्तम विधि है। यह दत्तों का संकलन, संग्रहण, सारणीयन, वर्गीकरण, मूल्याँकन, सामान्यीकरण एवं व्याख्या, तुलना एवं मापन भी करती है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन, समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा स्वयं उपस्थित होकर शिक्षक प्रशिक्षण से शिक्षकों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित दत्त संकलन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध समस्या हेतु के लिए मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के कुल 50 शिक्षक–प्रशिक्षकों का चयन किया गया तथा उनकी शिक्षण में प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 25 पुरुष एवं 25 महिला शिक्षकों को 5 उच्च माध्यमिक विद्यालयों से चयनित किया गया।

अध्ययन का परिसीमन

1. अध्ययन में वे ही महिला–पुरुष शिक्षक चुने गये जिनका शिक्षक–प्रशिक्षण पूर्ण हो चुका है और वे वर्तमान में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य में संलग्न हैं।
2. अध्ययन केवल ग्वालियर नगर के शिक्षक–प्रशिक्षकों पर ही किया गया है।
3. शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने शिक्षक प्रशिक्षण के लिए स्व–निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया एवं पी. कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित Teacher Eectivenes Scale (TES) का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना 1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका क्र. 1: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

शिक्षक	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
महिला शिक्षक (25)	54.00	9.23	48	0.60
पुरुष शिक्षक (25)	52.49	8.59		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

48 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.69 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.02 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 0.60 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है, अर्थात् उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका क्र. 2: उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में प्रभावशीलता के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

शिक्षक	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
महिला शिक्षक (25)	168.30	36.50	48	2.85
पुरुष शिक्षक (25)	143.23	24.44		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

48 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.69 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.02 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 2.85 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण में प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर होता है। अतः परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

शिक्षक–प्रशिक्षण में महिला एवं पुरुष दोनों ही एक साथ प्रशिक्षण लेते हैं तथा अकादमिक रूप से अध्यापन कार्य के क्रियाकलापों में संलग्न रहते हैं। निष्कर्षानुसार महिला एवं पुरुष शिक्षकों का प्रशिक्षण तो समान पाया गया परन्तु दोनों की शिक्षक प्रभावशीलता में अन्तर दृष्टिगोचर हुआ है। इसका यह अर्थ है कि महिला शिक्षक प्रशिक्षणोपरान्त उत्तम अध्यापन करती हैं जबकि पुरुष शिक्षक इनसे पीछे हैं, दोनों की शिक्षक प्रभावशीलता में अन्तर

है, अर्थात् महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता पुरुष शिक्षकों से अधिक है।

सुझाव

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में महिला एवं पुरुष शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान पढ़ाये गए पाठ्यक्रम को आत्मसात करना चाहिए।
2. शिक्षकों को समय–समय पर प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने ज्ञान तथा कौशल में वृद्धि करनी चाहिए।
3. शिक्षकों को उन्मुखीकरण कार्यक्रमों के द्वारा नई तकनीक से परिचित होकर विद्यार्थियों को उसका लाभ पहुँचाना चाहिए।
4. शिक्षकों को अध्यापन में प्रभावशाली रहने के लिए समय के साथ चलने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए।
5. प्रशिक्षण के दौरान शिक्षण को कैसे प्रभावशाली बनाया जाए इस ओर पुरुष शिक्षकों के महिला शिक्षकों के साथ चर्चा करनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. (2012), *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. भार्गव, महेश, *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,* एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. भगवान दास (2006) *शिक्षा मनोविज्ञान,* ओमेगा पब्लिक नई दिल्ली ।
4. चौधरी डॉ प्यारे लाल, चौपड़ा आर.एल. (नवीनतम संस्करण) *शैक्षिक अनुसंधान,* स्वाति पब्लिकशन।
5. दुबे, सत्यनारायण, (2014) *अध्यापक शिक्षा,* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

––==00==––